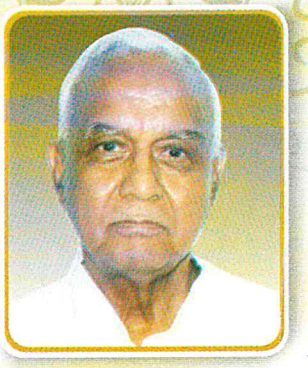


# Shri Brahmdev Sharma 'Bhai Ji'

Shri Brahmdev Sharma, popularly known as 'Bhai Ji', is the patron of Vidya Bharti Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan, the educational NGO.

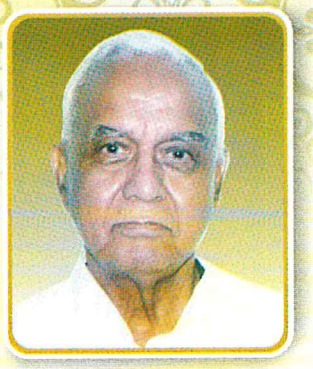
2. Born on November 3, 1938, at Ganiyavali village in Aligarh district, Brahmadev ji completed his M.A. (Economics) in 1961. He did his B.T. (Bachelor of Teaching) in 1962 and M.A. (Hindi) in 1968 from Agra University.

3. Shri Brahmadevji devoted his entire life to serve the society as RSS pracharak (full time worker). He took up the responsibility of Saraswati Shishu Mandir in Uttarakhand and continued as Headmaster till 1965. He was promoted to the post of observer-cum-guide of Uttarakhand in 1967 and subsequently became the observer of West Uttar Pradesh in 1973. His organizational skill and capacity elevated him to the position of organizing secretary in U.P. in 1981. He steered the organization in U.P. till 1995 and rose to the important position of All India Associate Organizational Secretary. He took the charge as All India Organizational Secretary in 2000. He was detained under MISA in Lucknow Jail from 1975 to 1977 during emergency. He was instrumental in giving shape to various educational projects and schemes. He has been the source of inspiration and motivation to thousands of teachers, headmasters and activists who are engaged in the field of education.

4. Shri Brahmadevji is the founder trustee of Shiksha Sanskriti Uthan Nyas, which aims at doing away with the distortions and discrepancies in the text books and bringing about changes and reforms in education. Bhaurao Devras Sewa Nyas was established under the able leadership of Bhai Ji to cater the health and educational needs of downtrodden, tribals and slum dwellers. The trust encourages talented students by giving scholarships. Educational periodicals and magazines viz. Himanchali, Seva Chetna, Alok, Shishulok, Vidya Bharti Pradeepika were launched under his guidance and leadership

5. Shri Brahmadevji felt the need of preserving and promoting the rich cultural traditions and heritage of Bharat. As the organizing secretary of Vidya Bharti Sanskriti Shiksha Sansthan, he took up this task. With his relentless efforts 20 lacs children participate every year in the 'Samskriti Dnyan Pariksha' in 10 different languages. Vidya Bharti Akhil Bhartiya Shiksha Sansthan with its 23,000 formal and non-formal education centers, 1.5 lacs dedicated teachers and 40 lacs students, has emerged as the largest educational NGO. Today even at the age of 77, Bhai Ji tours vigorously throughout the length and breadth of Bharat to inspire, encourage and motivate thousands of organizer, teachers and school management committees.

6. Shri Brahmadev Ji tirelessly endeavoured to reach the remote and sensitive areas viz. North-East, Jammu & Kashmir, Border areas of Bharat where no government machinery could reach. The lamp of education was lit, without a government aid. He was successful in garnering support and co-operation of society to set up modest educational centers in this neglected and backward areas.



# श्री ब्रह्मदेव शर्मा 'भाई जी'

आम तौर पर 'भाई जी' के नाम से प्रसिद्ध श्री ब्रह्मदेव शर्मा शैक्षणिक गैर-सरकारी संगठन विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के संरक्षक हैं।

2. आपका जन्म अलीगढ़ जिले के गनियावली गांव में नवम्बर 3, 1938 को हुआ। आपने वर्ष 1961 में एम.ए. (अर्थशास्त्र) की शिक्षा पूरी की। आपने आगरा विश्वविद्यालय से वर्ष 1962 में बी.टी. (बैचलर ऑफ टीचिंग) तथा वर्ष 1968 में एम.ए. (हिन्दी) की डिग्री प्राप्त की।

3. आपने आर.एस.एस. प्रचारक (पूर्णकालिक कार्यकर्ता) के तौर पर अपना पूरा जीवन समाज की सेवा में समर्पित कर दिया है। आपने उत्तराखण्ड में सरस्वती शिशु मंदिर का उत्तरदायित्व लिया और वर्ष 1965 तक प्रधानाध्यापक रहे। वर्ष 1967 में आपको उत्तराखण्ड के पर्यवेक्षक-सह-मार्गदर्शक के पद पर पदोन्नति दी गई तत्पश्चात वर्ष 1973 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के पर्यवेक्षक बने। संगठनात्मक कौशल और क्षमता के कारण आप वर्ष 1981 में उत्तर प्रदेश में संगठन सचिव के पद पर आसीन हुए। उन्होंने वर्ष 1995 तक उत्तर प्रदेश में संगठन को एक नई दिशा दी तथा ऑल इंडिया एसोसिएट आर्गेनाइजेशनल सेक्रेट्री के महत्वपूर्ण पद तक पहुंचे। आपने वर्ष 2000 में अखिल भारतीय संगठन सचिव का कार्यभार ग्रहण किया। वर्ष 1975 से 1977 तक आपातकाल के दौरान आपको मीसा के अंतर्गत लखनऊ जेल में नजरबंद कर दिया गया था। आपने विभिन्न शैक्षणिक परियोजनाओं और योजनाओं को नया रूप देने में अग्रणी भूमिका निभाई है। आप शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हजारों शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों और कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा-स्रोत रहे हैं।

4. आप शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के संस्थापक न्यासी हैं, जिसका लक्ष्य पाठ्यपुस्तकों में मिथ्या वर्णन और विसंगितयों को दूर करके शिक्षा में परिवर्तन तथा सुधार लाना है। आपके कुशल नेतृत्व में भाऊराव देवरस सेवा न्याय की स्थापना की गई, जिससे कि दबे-कुचले लोगों, आदिवासियों और मलिन बस्तियों में रहने वाले लोगों की स्वास्थ्य और शिक्षा संबंधी जरुरतें पूरी हो सकें। यह न्यास छात्रवृत्ति प्रदान करके प्रतिभाशाली छात्रों को प्रोत्साहित करता है। आपके मार्गनिर्देशन और नेतृत्व में शैक्षणिक पत्र-पत्रिकाएं जैसे हिमाचली, सेवा चेतना, आलोक, शिशुलोक, विद्या भारती प्रदीपिका की शुरुआत की गई।

5. आपने भारत के समृद्ध सांस्कृतिक पंरपरा और धरोहर को संरक्षित तथा प्रोत्साहित करने की आवश्यकता को महसूस किया है। विद्या भारती संस्कृति शिक्षा संस्थान के संगठन सचिव के रूप में आपने इस कार्य का बीड़ा उठाया है। आपके अनवरत प्रयासों के कारण प्रत्येक वर्ष 20 लाख बच्चे, 10 विभिन्न भाषाओं में 'संस्कृति ध्यान परीक्षा' में हिस्सा लेते हैं। विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के 23,000 औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा-केन्द्र, 1.5 लाख समर्पित शिक्षक तथा 40 लाख छात्र हैं जो आपके और आपके समर्पित सहयोगियों के नि:स्वार्थ प्रयासों के फलस्वरुप सबसे बड़े शैक्षणिक गैर-सरकारी संगठन के रूप में उभरा है। आज भी 77 वर्ष की आयु में आप हजारों आयोजकों, शिक्षकों तथा विद्यालय प्रबंधन समितियों को प्रेरित, प्रोत्साहित और विश्वास जगाने हेतु पूरे भारत वर्ष का उत्साहपूर्वक दौरा करते हैं।

6. आपका अथक प्रयास रहता है कि भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र, जम्मू एवं कश्मीर और सीमावर्ती क्षेत्रों जैसे दूरस्थ और संवेदनशील क्षेत्रों तक पहुंचा जाए जहां किसी भी सरकारी तंत्र की उपस्थिति नहीं है। आपने बिना किसी सरकारी सहायता से शिक्षा की अलख जगाई है। इन उपेक्षित और पिछड़े क्षेत्रों में साधारण शिक्षा केन्द्रों की स्थापना करने में आप समाज का समर्थन और सहयोग प्राप्त करने में सफल रहे हैं।